कृष्णा अग्निहोत्री के साथ डॉ. तस्लीमा का विशेष साक्षात्कार

20 वीं शताब्दी के अंतिम दशक आते आते हिन्दी साहित्य जगत में लेखकों का अपेक्षा लेखिकाओं का लेखन सक्रिय सजग और सत्य के निकट रहा है । लेखिकाओं ने अपने रचनाओं के मगध्यम से पितृप्रधान संसकृति चुनैती देते हुए अपने अधिकार लिए संधर्ष किया है । उन महिला साहत्यकारों में विशेष उल्लेखनीय नाम कृष्णा अग्निहोत्री का है ।ऐसे महान लेखिका से साक्षात्कार हेतु मैंने उनके जन्मदिन के मुअवसर पर इंदौर में स्थित निवास स्थान पर गई । जिन्हें यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ :

तस्लीमा:– आप हिन्दी साहित्य में 'बोल्ड लेखिका' के रूप में प्रसिद्ध हैं । आप लेखिका बनने की प्रेरक तत्व किसे मानते हैं?

कृष्णाजी:– साहित्य व सभी पूर्व साहित्यकारों के प्रति निष्ठा, आदर व अभिमान ने ही मुझे लेखिका बनने के प्रेरणा दिया । साथ ही छोटी उम्र में ही घर पर सभी प्रमुख कृतियों को अध्ययन करने का मुझे मौका मिला । जैसे बचपन में 'संस्कृति के चार अध्याय', 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया', 'सत्यार्थ प्रकाश', 'राजस्थान का इतिहास' जैसे कृतियाँ और महाभारत और रामचरित मानस जैसे महाकाव्यों को पढ़ने का सुअवसर मिला । पंडित विश्वनाथ मिश्र, भवानी भाई विरेन्द्र मिश्र, सुमित्रा देवी, माखनलाल चतुर्वेदी, विनय मोहन शर्मा नीरज, डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन जैसे साहित्यकारों के साथ घर पर ही विचार विनिमय व वाद–विवाद करने का मौका मिलने के कारण मुझमें लेखिका बनने की इच्छा हुई ।

तस्लीमा:– आपने अपनी साहित्यिक यात्रा कविताओं से आरंभ की थी ।लेकिन आपकी कविताएँ अन्य रचनाओं के जैसे अभी तक प्रकाशित क्यों नहीं हुईं हैं?

कृष्णाजी:– कविताएँ मेरे बचपन की सुंदर स्वप्न का साकार रूप है । मैंने आठवीं कक्षा में 'मुनगे की फली' नामक कविता रचा था किन्तु कविता के क्षेत्र में अधिक प्रोत्साहन व रूचि न होने के कारण वह अधूरा रह गया । अधिक कविताएँ न रचने के कारण छपने का प्रश्न भी उद्‌भव नहीं हुआ ।

तस्लीमा:– 'स्त्री–अस्मिता' के बारे में आपकी क्या राय है ।

कृष्णाजी:– स्त्री भी पुरूष के जैसे हाड–माँस, रक्त की प्राणी है । दोनों एक दूसरे के समकक्ष है । वर्तमान युग में स्त्री ने अपनी योग्यता प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध कर दी है और अपनी अस्मिता या अस्तित्व की पुकार लगा अपना झंडा ऊँचा कर दिया है कि वह पुरूष से कम नहीं, उसके अस्तित्व को समाज कम न समझे ।

तस्लीमा:– आपकी समकालीन लेखिकाओं के बारे में आप अपने विचार व्यक्त करिए ।

कृष्णाजी:– हमारे दशक में सभी लेखिकाओं ने 'स्त्री मुक्ति' को केन्द्र बिन्दु बनाकर साहित्य रचना किया है । उनमें मृदुला गर्ग, चित्रा मुदगल, राजी सेठ, चन्द्रकांता, सूर्यबाला, शशिप्रभा शास्त्री, दीप्ति खंडेलवाल, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, मालती जोशी, मेहरून्नीसा परवेज़ आदि प्रमुख हैं । सभी ने गलत सड़ी–गली परंपरा का विरोध किया । 'स्त्री अस्मिता' के समर्थन में शंख बजाया व युग की विषमताओं पर प्रकाश डाला है । सबने कलात्मक रचनाएँ समाज को दी है । उनकी आत्मकथाओं में निर्भयता व निड़रता रूबरू है ।

तस्लीमा:– कहानियों की यथार्थता के लिए आप जेल गई । वहाँ अपराधियोंसे मिली और उस अनुभव को आपने 'पंछी पिंजरे' नामक कहानी संग्रह में चित्रित किया है । इस साक्षात्कार के अनुभव बताइए ।

कृष्णाजी:– मैं सबसे पहले जेल के अधिकारी विजय शुक्ला को शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ क्योंकि उन्होंने इस काम के लिए मेरा पूरा सहयोग दिया । उस जेल में खूंखार महिलाएँ भी मौजूद थीं । इसलिए जब तक मैंने साक्षात्कार लिया तब तक मेरे साथ वहाँ सिपाही उपस्थित थे । वहाँ मैंने ज्यादा हिंसक मनोवृत्तिवाली महिला अपराधियों से मिलकर साक्षात्कार लिया । इस साक्षात्कार के दौरान मुझे यह एहसास हुआ है कि ये खूंखार महिलाएँ इतने साल की सजा काटने के बाद भी उनके चेहरे की क्रूरता व विकराल स्थितियाँ बिल्कुल बदली नहीं । उनमें कोई अपराध बोध दिखायी नहीं देती ।

तस्लीमा:– स्त्री पुरूष के बराबर आज सभी क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभा रहीहै । यहाँ तक अपराध के क्षेत्रों में भी । आपके अपराधिन क्रमांक 'सेनकी' और 'सुगंध रहित' चमेली जैसी कहानियों में नायिका को अपराधी के रूप में चित्रित किया गया है । इस तरह स्त्री को नकारात्मक रूप से चित्रित करने का कोई उद्देश्य है क्या?

कृष्णाजी:– हाँ, उद्देश्य जरूर है । नकारात्मकता से ही सकारात्मकता भाव उपजती है । जो अगर आप नकारात्मकता स्वीकार कर रही है तो या वह स्थितियाँ किसी पाठक को व किसी व्यक्ति को प्रभावित करे तो इसका मतलब यह हुआ है कि वह मान रहा है कि नकारात्मकता बुरी चीज़ है, उसको सकारात्मकता को अपनाना चाहिए । समाज में यदि पाठक व कोई व्यक्ति यह मान लेता है कि यह बुरा विचार है तो वह जरूर बस बुरी बात को हटाने की कोशिश करेगा । इसलिए कभी–कभी नकारात्मकता के नग्न स्वरूप को प्रस्तुत करना लेखिका का सामाजिक दायित्व बनता है ।

तस्लीमा:– आपके साहित्य के पाठकों को कानून–संहिताओं का ज्ञान ज्ञात होता है । क्या आपने कानूनी विषय पर कोई विशेष अध्ययन किया है?

कृष्णाजी:– मैंने जीवन का अनुभव से ही सब कुछ ज्ञान प्राप्त किया है ।अपने भाई के परिवार के कारण अपने ही घर से मैं खुद निर्वासित हुई और तब मुझे जिंदगी में बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला । उसी कोर्ट–कचहरी के सिलसिले में मुझे यह सब ज्ञान प्राप्त हुआ ।

तस्लीमा:– आपके साहित्य में चित्रित अधिक घटनाएँ सत्य कथा पर आधारित है, आप क्या कहेगी इस संदर्भ में?

कृष्णाजी:– मैंने जिन्दगी में जो भोगा है और दूसरों ने जो भोगा हुआ उस दु:ख–दर्द का अनुभव करते हुए मैंने साहित्य रचा है । उसी कारण मेरी रचनाओं में कल्पना कम और यथार्थता अधिक दिखायी देता है ।

तस्लीमा:– आत्मकथा लिखना एक साहस पूर्ण कार्य है । आपने 'लगता नहींहै दिल मेरा', 'और और औरत' नामक दो आत्मकथाएँ हैं । इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

कृष्णाजी:– मैंने जीवन में बहुत झेला, बहुत भोगा और बहुत सहा । जब सहन नहीं हुआ तो उसे लिख डाला । लिखने का उद्देश्य किसी को दु:ख पहुँचाना या लांछित करना नहीं है । बल्कि सच्चाई को स्पष्ट करने की कोशिश मेरी रही ।

तस्लीमा:– आपके साहित्य के पाठकों को कानून–संहिताओं का ज्ञान ज्ञात होता है । क्या आपने कानूनी विषय पर कोई विशेष अध्ययन किया है?

कृष्णाजी:– मैंने जीवन का अनुभव से ही सब कुछ ज्ञान प्राप्त किया है ।अपने भाई के परिवार के कारण अपने ही घर से मैं खुद निर्वासित हुई और तब मुझे जिंदगी में बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला । उसी कोर्ट–कचहरी के सिलसिले में मुझे यह सब ज्ञान प्राप्त हुआ ।

तस्लीमा:– आपके साहित्य में चित्रित अधिक घटनाएँ सत्य कथा पर आधारित है, आप क्या कहेगी इस संदर्भ में ।

कृष्णाजी:– मैंने जिन्दगी में जो भोगा है और दूसरों ने जो भोगा हुआ उस दु:ख–दर्द का अनुभव करते हुए मैंने साहित्य रचा है । उसी कारण मेरी रचनाओं में कल्पना कम और यथार्थता अधिक दिखायी देता है ।

तस्लीमा:– आत्मकथा लिखना एक साहै दिल मेरा', 'और और औरत' नामक दो आत्मकथाएँ हैं । इसके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

कृष्णाजी:– मैंने जीवन में बहुत झेला, बहुत भोगा और बहुत सहा । जब सहन नहीं हुआ तो उसे लिख डाला । लिखने का उद्देश्य किसी को दु:ख पहुँचाना या लांछित करना नहीं है । बल्कि सच्चाई को स्पष्ट करने की कोशिश मेरी रही ।

तस्लीमा:– आजकल हिन्दी साहित्य में अंग्रेज़ी व अन्य भाषाओं का शब्द प्रयोग ज्यादा हो रहा है । इस संबंध में आपका क्या विचार है?

कृष्णाजी:– आज साहित्य ने अन्य भाषा के शब्द आत्मसात् कर लिया है ।इसलिए हिन्दी में बोलचाल के सब शब्द लिखना स्वाभाविक व उचित है । लेकिन अधिक उपयोग नहीं होना चाहिए ।

प्रध्यापिका, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, विश्वविधालय कॉलेज ,मंगलूरु

Mail: tasleemaucm22@gmail.com